Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

कुटीर उधोग के उत्पादों की विपणन समस्याएँ एवं तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Nisha Sharma[1]* Prof. P. K. Bansal[2]

[1]Guest Faculty in Commerce Department, K. R. G. Girl's Autonomous P.G. Collage, Gwalior

[2]Professor

----------X----------

प्रस्तावनाः—

कुटीर उद्योगों की एक और समस्या अक्षम उत्पादन और अधिक व्यय पूर्ण विधियों से उत्पादन करना है। इससे प्रति इकाई उत्पादन लागत अधिक आती है। शिक्षा का अभाव, वित्तीय कठिनाई तथा सीमित बाजार के कारण ग्वालियर जिले के कुटीर उद्योगों द्वारा उत्पादन की परम्परागत तकनीकों का प्रयोग किया जाता है जिससे उत्पादन की किस्म घटिया होती है तथा लागत भी अधिक आती है। यहाँ अधिकांश व्यापारी अशिक्षित, अज्ञानी और रूढ़िवादी हैं। अतः वे नई तकनीकी की जानकारी के अभाव के कारण पुरानी परम्परागत उत्पादन विधियों से उत्पादन कार्य करते हैं। फलतः इनकी कार्यक्षमता कम और माल की किस्म खराब होती है तथा उत्पादित माल मशीनों द्वारा निर्मित माल की प्रतिस्पर्धा में नहीं ठहर पाता है।

कुटीर उद्योग के व्यापारियों व कारीगरों पर स्थानीय करों का भारी बोझ भी एक विशिष्ठ समस्या है। उनके द्वारा क्रय किये गये कच्चे माल पर और उत्पादित माल पर चुँगी के रूप में करारोपण किया जाता है। अंततः यह कर उपभोक्ताओं की जेब से नहीं जाता वरन् इसका भार असहाय कारीगरों व व्यापारियों को ही वहन करना पड़ता है। इन उद्योगों में उत्पादन लागत अधिक होने से पहले ही निर्मित माल महँगा पड़ता है, ऊपर से इस प्रकार के करारोपण के कारण माल का मूल्य और भी अधिक हो जाता है। ब्रिटिश कालीन भारत में अंग्रेजों ने भारी करारोपण की दुहरी नीति का सहारा लेकर ही यहाँ के लघु एवं कुटीर उद्योगों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था क्योंकि व्यक्ति की सहज मनोवृत्ति होती है कि वह सस्ते उत्पाद खरीदें।

क्रय–विक्रय की प्रक्रियाः

क्रय प्रक्रियाः विपणन संघ आवश्यकतानुसार मण्डियों में प्राथमिक विपणन सहकारी समितियों के माध्यम से विभिन्न उत्पादों की खरीद न्यूनतम समर्थन मूल्य तथा बाजार मूल्य पर करता है। जिसमें संघ उत्पादों की खरीद उस समर्थन मूल्य पर करता है तथा प्रशोधन कराकर भारतीय उत्पाद निगम को देता है। उत्पादों की खरीदी के लिये विपणन संघ एक विपणन मध्यस्थ की भांति कार्य करता है। ग्वालियर जिले में विपणन संघ के चार संग्रहण केन्द्र हैं। नगद उत्पाद विक्रय केन्द्रों की संख्या पाँच है तथा सहकारी विपणन केन्द्रों की संख्या 99 है। उक्त व्यवस्था व्यवसायियों को उत्पाद उचित दामों पर निकटतम स्थानों पर उपलब्ध कराने की दृष्टि से की गई है।

विक्रय प्रक्रियाः प्रत्येक व्यवसाय द्वारा किये गये उत्पादन का लक्ष्य भी विक्रय ही होता है। विक्रय उत्पादन एवं उपभोग को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है। व्यवसायिक संस्था की समृद्धि, राष्ट्र का आर्थिक विकास, समाज का जीवन स्तर, उपभोक्ता की अधिकतम संतुष्टि विक्रय कार्य पर ही निर्भर करती है। विक्रय के महत्व को स्पष्ट करते हुए अमरीकी प्रो. अर्नेस्ट तथा डेवाल ने लिखा है कि ''विक्रयण कार्य हमारी अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

विपणन व्यवस्था एवं विपणन संबंधी समस्याएँः

विपणन व्यवस्थाः विपणन व्यवस्था के सभी क्षेत्रों में सुमति लाना एक अच्छी सूचना के बिना असंभव है। यहाँ एक उदाहरण द्वारा विपणन संबंधी व्यवस्था की आवश्यकता को समझा जा सकता है – एक उद्यमी जो अपने उत्पाद बेचना चाहता है उसके पास बाजार भाव, भण्डारण, परिवहन आदि की कोई व्यवस्था नहीं है, अर्थात् वह अपने उत्पाद को मण्डी में जो भी भाव होगा बेचकर ही आएगा। यदि उसके पास अपने पास की सभी मण्डियों की ताजा सूचनाएँ होती तो वह अपने उत्पाद को उस मण्डी में ले जाता जहाँ पर उसको ज्यादा दाम मिलते और यदि उस दिन उसको भाव अच्छे नहीं मिलते तो वह उसको भण्डारण में रखता तथा उस दिन बेचता जिस दिन उसके ज्यादा दाम मिलते।

विपणन संबंधी व्यवस्थाओं में जैसे – प्रत्येक उत्पाद के ताजा भाव, उत्पादन से संबंधित उपकरणों, कच्चा माल आदि के उचित मूल्य तथा प्रयोग की जानकारी, उत्पाद विशेष के बाजारों या मण्डियों की जानकारी आस पास के उत्पादों के निर्यात की जानकारी होने से उद्यमियों को न केवल उत्पाद का सही मूल्य देती है, वरन् उनमें उत्पादन बढ़ाने की इच्छा का स्वतः विकास होता है व उत्पादन बढ़ाने की नई तकनीकों, साधनों आदि का विपणन क्षेत्र में प्रयोग बढ़ता है।

विपणन व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए बहुत सी प्रारंभिक सूचनाओं को मद्दे नजर रखना होता है। उत्पाद के ताजा भाव की जानकारी एवं भविष्य के अनुमान उद्यमी एवं उपभोक्ता दोनों को बहुत प्रभावित करता है। प्रत्येक उत्पाद का निर्यात कहाँ किया जा सकता हैं, निर्यात करने की कार्यप्रणाली एवं ग्रेडिंग,

परिवहन की जानकारी होने से उद्यमी अन्य जगह अपने उत्पाद को निर्यात करना चाहे तो कर सके। वर्तमान में जिले में असंख्य उद्यमी अशिक्षा के कारण उपलब्ध कम्प्यूटर तकनीकी से लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

विपणन संबंधी समस्याएँः कुटीर उद्योगों के उत्पादों की विपणन व्यवस्था के विकास के लिए शासन द्वारा स्थापित किए गए विभिन्न विभागों के सशक्त संगठनात्मक ढाँचें व प्रदत्त सुविधाओं के रहते हुए भी उद्यमी व उत्पादक को विभिन्न समस्याओं जैसे –तकनीकी, उत्पादन, प्रबंध, वित्त तथा विपणन जैसी प्रमुख संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

सरकार द्वारा चलाई गई आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया अर्थात् उदारीकरण के परिणामस्वरूप विपणन व्यवस्था की ओर अधिक सरलीकृत तथा विस्तृत किये जाने के बावजूद उत्पाद विपणन व्यवस्था में निम्न समस्याएँ विद्यमान हैं –

- ❖ विपणन आधारित भौतिक सुविधाओं की कमी
- ❖ विपणन सम्बन्धी सूचनाओं की कमी
- ❖ विपणन की कुरीतियों का पाया जाना
- ❖ बिना श्रेणीकरण एवं प्रमापीकरण उत्पादों का विक्रय
- ❖ तकनीकी समस्या
- ❖ शक्ति के साधनों की समस्या
- ❖ परिवहन की समस्या
- ❖ वृहत् स्तरीय उद्योगों से प्रतिस्पर्धा
- ❖ जन–रूचि का अभाव
- ❖ प्रमाणीकरण
- ❖ उत्साह का अभाव
- ❖ स्थान एवं स्थिति संबंधी असुविधायें
- ❖ औद्योगिक सहकारिता की कम उन्नति
- ❖ शासकीय क्रय

ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योग की स्थितिः

ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योग क्षेत्र भारतीय औद्यौगिक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है जो कि बड़ी मात्रा में उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन करने के साथ–साथ देश के लिए विदेशी मुद्रा का भी सृजन करता है। कुटीर उद्योग क्षेत्र की उपर्युक्त उपलब्धियाँ उस समय धूमिल पड़ जाती हैं जब इसका मूल्याँकन इस क्षेत्र में पर्याप्त औद्यौगिक रूणता के आधार पर किया जाता है।

कुटीर उद्योग का अर्थव्यवस्था में एक विशिष्ट स्थान है इस उद्योग में छोटी मात्रा में पूँजी लगाकर बड़ी मात्रा में रोजगार के अवसर उपलब्ध करा सकते हैं। कुटीर क्षेत्र की महत्ता केवल रोजगार के अवसर प्रदान करने तक सीमित नहीं है महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करना इसकी महत्वपूर्ण पहल है क्योंकि महिलाओं की स्थिति हमारे समाज में शोचनीय है जो कि देश के विकास में भी भूमिका अदा करती है। कुटीर उद्योग समाज के कमजोर वर्ग व पिछड़े क्षेत्रों को औद्यौगिक क्षेत्र में उतरने के लिए सहायता प्रदान करते हैं जो कि अत्यंत सराहनीय कार्य है।

ग्वालियर जिले में औद्योगिक विकास की गति बहुत धीमी रही है क्योंकि यहाँ कृषि की प्रधानता होने से उद्योगों का विकास बहुत धीमी गति से हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कृषि व उससे सम्बंधित क्षेत्रों में ही पूँजी का विनियोजन किया गया परिणामस्वरूप औद्योगिक क्षेत्र की प्रगति धीमी रही। जैसे–जैसे समय गुजरा शासन के प्रयासों व उद्योग केन्द्रों की स्थापना से जिले में उद्यमिता का माहौल बना तथा बेरोजगारों में स्वयं का उद्यम लगाने की प्रेरणा से कुटीर उद्योग क्षेत्र में प्रगति होने लगी। प्रारंभ में कृषि पदार्थों, वन्य उपजों, कौशल पर आधारित परम्परागत कुटीर उद्योगों की स्थापना हुई जिनमें तेल मिल, लकड़ी के खिलौने, दरी, कालीन, अगरबत्ती निर्माण, माचिस उद्योग आदि उद्योग लगाये गये जिनमें सीमित पूँजी लगाई गई प्रबंधकीय कुशलता की आवश्यकता नहीं थी। अतः जनता ने आसानी से इन उद्योगों को अपनाया व इनमें बनायी हुई वस्तुओं के उपयोग को प्रोत्साहन दिया ।

तालिका क्रमांक – 01 ग्वालियर जिले के उद्योगों में पूँजी विनियोग

क्रमाँक	वर्ष	उद्योग संख्या	पूँजी लाख रूपये में विनियोग	रोजगार
1.	2004–05	620	45036.00	1652
2.	2005–06	610	44140.00	1673
3.	2006–07	625	45129.00	1738
4.	2007–08	756	71832.00	1961
5.	2008–09	843	283100.00	1692

स्त्रोत :– जिला उद्योग केन्द्र, ग्वालियर से प्राप्त जानकारी के आधार पर।

उपर्युक्त तालिका का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि ग्वालियर जिले में वर्श 2004–05 में 620 उद्योगों को स्थापित करने में पूँजी का विनियोग 45036 (हजार) रुपये था तथा वर्श 2005–06 में क्रमशः 610 उद्योगों को स्थापित करने में 44100 (हजार) रूपये का पूँजी विनियोग किया गया। इस वर्ष उद्योगों की स्थापना में क्रमशः 2.04 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी। वर्श 2006–07, 2007–08 व 2008–09 में क्रमशः 625,756,843 उद्योग स्थापित किए गये। जिन्हें स्थापित करने में क्रमशः 45129 रु., 712832 रु. तथा 283100 (लाख में) रु. पूँजी विनियोग किया गया। जो ग्वालियर जिले में पूँजी विनियोग में क्रमशः वर्श बार वृद्धि दर्शाता है इससे स्पश्ट होता है कि ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योगों की संख्या 2004–05 की तुलना में 2008–09 तक लगातार वृद्धि हुयी। जिससे कुटीर उद्योगों की स्थिति में सुधार आया।

तालिका क्रमांक – 02 ग्वालियर जिले में उद्योगों की स्थिति

वस्तु का नाम	संख्या
आटा चक्की	230
दाल मील	15
कन्फैक्शनरी	35
तेल मिल	210
साबुन	05

www.ignited.in

कृषि औजार	170
टोकरी	10

स्त्रोत :– जिला उद्योग केन्द्र से प्राप्त जानकारी के आधार पर

ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योगों के वित्तीय संसाधनः

आधुनिक अर्थव्यवस्था में वित्त से तात्पर्य है – ''मुद्रा को उस समय उपलब्ध कराना जबकि उनकी आवश्यकता हो।'' उत्पादन के साधनों में पूँजी का विशेष स्थान है । औद्योगिक विकास में उद्योगों के लिए वित्त का वही महत्व है जो कि मानव जीवन के लिए धमनियों में प्रवाहित होने वाले रक्त का । कोई भी उद्योग तब तक सफल नहीं हो सकता। जब तक उसके पास पर्याप्त मात्रा में पूँजी उपलब्ध न हो। वस्तुतः कहा जाता है कि औद्योगिक वित्त किसी भी देश के औद्योगीकरण में आधारशिला का कार्य करता है ।1 ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योगों के विकास हेतु उद्योग केन्द्र के साथ–साथ कई अनेक प्रकार की शासकीय संस्थायें भी कार्यरत हैं इनके कार्य इस प्रकार हैं–

1. मध्य प्रदेश औद्योगिक केन्द्र विकास निगम
2. मध्य प्रदेश वित्त निगम
3. मध्य प्रदेश कुटीर उद्योग निगम
4. मध्य प्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग परिषद
5. मध्य प्रदेश राज्य वस्त्र निगम
6. मध्य प्रदेश चर्म विकास निगम

ग्वालियर जिले में विभिन्न संस्थाओं द्वारा उद्योगों को प्राप्त वित्तीय सहायताः

ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योगों की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए काफी वित्तीय संस्थायें हैं। जिले में राष्ट्रीयकृत बैंक, व्यापारिक बैंक एवं विभिन्न सहकारी बैंकों की शहरी क्षेत्र में एवं ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत 77 शाखाऐं हैं। ये शाखाऐं अपने आस पास के क्षेत्र में जो कुटीर उद्योग स्थापित हैं उनकी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य करती है। जैसे मध्य प्रदेश औद्योगिक वित्त निगम, सहकारी समीतियाँ एवं खादी ग्रामोद्योग जो कि राजकीय सहायता प्रदान करते हैं। ये कुटीर उद्योगों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराते हैं। ये संस्थायें वित्तीय सहायतायें उपलब्ध कराने के अतिरिक्त उद्योगों के लिए जो सुविधायें आवश्यक हैं तथा अनुदान आदि उपलब्ध कराती हैं। इन विभिन्न वित्तीय संस्थाओं एवं समितियों व निगमों का विवरण इस प्रकार है जिन्होनें कुटीर उद्योगों को विभिन्न वर्षों में वित्तीय सहायता उपलब्ध करायी है।

1. मध्य प्रदेश औद्योगिक वित्त निगम
2. सहकारी साख संस्थाओं द्वारा प्रदत्त सहायता
3. खादी ग्रामोद्योग परिषद द्वारा प्रदत्त सहायता
4. बैंकिंग संस्थायें

ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योग के उत्पाद की विपणन स्थितिः

प्राचीन काल से ही ग्वालियर जिले की अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योगों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ के कुटीर उद्योगों के उत्पाद की माँग विदेशों में बहुत थी, ग्वालियर उस समय अपनी कारीगरी व कला के लिए देश में विख्यात था। कई शताब्दियों तक गौरव प्रदान करने वाले इन उद्योगों का ब्रिटिश शासन काल में तीव्रता से पतन हुआ। यह उल्लेखनीय है, कि इस अवनति के बावजूद आज भी जिले की अर्थव्यवस्था में इनका स्थान स्थापित है, और देश की पंचवर्षीय योजनाओं में इनके महत्व को स्वीकार किया गया है।

कुटीर उद्योगों में हथकरघा, खादी व ग्रामोद्योग, दस्तकारी, रेशम उद्योग, नारियल जटा, चटाई एवं रस्सी बनाना, बागवानी, पशुपालन, मुर्गीपालन, हाथ से धान कूटना, सूत बनाना, गुड़ बनाना आदि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त शहरों में संचालित होने वाले छोटे स्तर के पूर्णकालीन उद्योगों को भी हम इस श्रेणी में सम्मिलित कर सकते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इन उद्योगों का इतना निर्णायक महत्व होते हुये भी इनका वांछित विकास नहीं हो पाया, तथा आज ये उद्योग अनेक समस्याओं से ग्रस्त हैं। सभी कुटीर उद्योगों की समस्यायें एक जैसी नहीं होती हैं, फिर भी, कुछ सामान्य समस्याओं का वर्णन करना उचित होगा। इन उद्योगों की मुख्य समस्या कच्चे माल की उपलब्धता का अभाव है। कारीगरों को बहुधा उचित समय पर उचित मात्रा में अच्छी किस्म की वस्तु उचित मूल्य पर प्राप्त नहीं हो पाती है। इन कारीगरों की प्रमुख कठिनाई यह है, कि इन्हें स्थानीय व्यापारियों से कच्चा माल क्रय करना पड़ता है, जो अधिक मूल्य वसूल करके भी घटिया किस्म का माल प्रदान करते हैं।

एक ओर कुटीर उद्योगों द्वारा छोटे पैमाने पर बने माल की लागत अधिक होने से इनकी माँग में कमी आ जाती है, तथा दूसरी ओर वित्तीय संस्थायें ब्याज की ऊँची दरें वसूल करती हैं, जिससे इनके ब्याज के भार में वृद्धि हो जाती है।

कुटीर उद्योगों में एक बड़ी समस्या पूँजी की उपलब्धता होती है। कारीगरों को औजार एवं मशीनरी क्रय करने के लिये स्वभावतः अधिक समय तक के लिए ऋण की आवश्यकता होती है। इसके लिए कारीगर, महाजन का भी सहारा लेते हैं, जिनकी ब्याज–दर बहुत अधिक होती है तथा साथ में अनेक गैर वाणिज्यिक शर्तें भी सम्मिलित कर दी जाती हैं, परिणाम स्वरूप इन उत्पादकों को अपनी उत्पादित वस्तुएँ महाजनों के माध्यम से विवशतः बेचना पड़ती हैं। जिससे इन्हें दोहरा नुकसान उठाना पड़ता है, शोषण की यह प्रक्रिया आज भी निरन्तर जारी है।

उद्योगों की एक बड़ी दुविधा यह भी है, कि कारीगर, प्रायः असंगठित रूप में कार्य करते हैं। शिक्षा एवं प्रशिक्षण के अवसर तो उन्हें प्राप्त नहीं हो पाते हैं तथा शोध, अनुसंधान एवं तकनीक का भी अभाव पाया जाता है। शताब्दियों से कारीगर पुराने व परम्परागत औजारों से कार्य करते आ रहे हैं, इसके साथ ही साथ नये औजारों, यन्त्रों मशीनों व नवीन पद्धतियों से आज भी अपरिचित हैं। परिणामस्वरूप कुटीर उद्योग माल उत्तम किस्म का एवं सस्ता निर्मित नहीं कर पाते हैं, साथ ही उत्पादक अशिक्षित एवं रूढ़िवादी होने के नाते नवीन पद्धतियों को अपनाने से भी हिचकते हैं।

ग्रामीण औद्योगीकरण के विकास हेतु विपणन केन्द्रों की संख्या में वृद्धि करना, पिछड़े क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं में वृद्धि करना, विशेष रूप से शक्ति एवं परिवहन का विकास, कुटीर एवं लघु उद्योगों से सम्बन्धित विभिन्न अभिकरणों में परस्पर अधिक सामंजस्य स्थापित करना, इन उद्योगों की उत्पादन तकनीक में सुधार हेतु यंत्रों एवं उपकरणों के उत्पादन में वृद्धि करना तथा देश की स्थिति के अनुकूल उपयुक्त तकनीक को विकसित करना आदि कुछ महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकते हैं। यदि आवश्यक हो तो इन उद्योगों को संरक्षण प्रदान करने के लिए एक अधिनियम भी बनाया जाना चाहिये। ग्वालियर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में कुटीर उद्योगों की असीम सम्भावनायें विद्यमान हैं। उद्योगों के समक्ष आने वाली व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करके उद्योगों को स्थापित किया जा सकता है। साथ ही पूर्व स्थापित उद्योगों में आधुनिकीकरण करके हम खुली प्रतिस्पर्धा का सामना करने में भी सक्षम हो सकते हैं। ग्वालियर जिले में कृषि आधारित उद्योग, रसायन आधारित उद्योग, प्लास्टिक उद्योग, हौजरी उद्योग, रैगजीन बैग उद्योग ऐसे ही अनेक उद्योगों की स्थापना करके औद्योगिक विकास तीव्र गति से किया जा सकता है।

उपसंहार

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुये शोर्धाथी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन (कुटीर उद्योग के उत्पादों की विपणन समस्याएँ एवं तुलनात्मक अध्ययन) के अन्तर्गत समस्या का चयन किया गया है। कुटीर उद्योगों के विकास पथ की बाधा उचित विपणन व्यवस्था का अभाव भी है। व्यापारियों को अपने श्रम का समुचित मूल्य मिलना आवश्यक है परन्तु कुटीर उद्योगों की दोषपूर्ण स्थिति के कारण यह संभव नहीं हो पाता। कुटीर उद्योग प्रायः छोटे–छोटे व्यवसायियों द्वारा प्रारम्भ किये जाते हैं जिन्हें विपणन संबंधी न तो कोई ज्ञान होता है और न ही वे इसमें अधिक रूचि लेते हैं। जनता की रूचियों में परिवर्तन, विज्ञापन और प्रचार के सीमित साधन, वृहत उद्योगों की मशीन निर्मित उत्पादों से प्रतियोगिता आदि के कारण इन उद्योगों को अपने उत्पादन के विक्रय में बड़ी कठिनाई आती है।

प्रस्तुत शोध के लिये ग्वालियर जिले को अध्ययन क्षेत्र बनाने का प्रमुख कारण ग्वालियर जिले के कुटीर उद्योग का पिछड़ा होना है। ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योग के उत्पाद का उत्पादन दिन–प्रतिदिन घटता जा रहा है व विपणन संबंधी भी अनेक समस्यायें सामने आती है इन समस्याओं व सम्भावनाओं को ज्ञात करने के लिए शोधार्थी ने ज्यादा विस्तृत क्षेत्र न चुनकर ग्वालियर जिले को ही चुना है अतः प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में ''ग्वालियर जिले में कुटीर उद्योगों के उत्पादों का विपणन–समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ'' वि''ाय का अध्ययन किया गया है। उपर्युक्त समस्त बातों को ध्यान में रखकर शोध का क्षेत्र सम्पूर्ण ग्वालियर जिला निर्धारित किया गया है ।

सन्दर्भ संकेत :

डॉ. एस.सी. जैन – विपणन प्रबंध, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2001 पृष्ठ 230–231

वी.पी. त्यागी – भारतीय अर्थशास्त्र, जय प्रकाश नारायण एंड कम्पनी, मेरठ, 2000 पृष्ठ 59

जी.एस. सुधा – विपणन प्रबंध, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2002 पृष्ठ 204

डॉ. वी.एम. भदादा एवं वी.एल. पोरबाल – विपणन प्रबंध रमेश बुक डिपो, जयपुर, 2001 पृष्ठ 136

वी.वी. गिरि – भारतीय उद्योग में श्रम समस्याएँ, 2000 पृष्ठ 103

वार्शिक पत्रिका – जिला उद्योग केन्द्र, ग्वालियर, 2008 पृष्ठ 193

मध्यविचार – संस्कार भारती, ग्वालियर, 2007 पृष्ठ 8

Corresponding Author

Dr. Nisha Sharma*

Guest Faculty in Commerce Department, K. R. G. Girl's Autonomous P.G. Collage, Gwalior

E-Mail – nisaj1981@gmail.com